

निर्णय बहुजलास प्रकारा चन्द्र रेगर (R.A.S.) उपखण्ड अधिकारी अरनोद

प्रकरण सं. - 13/20

दायरा तारीख - 8-6-20

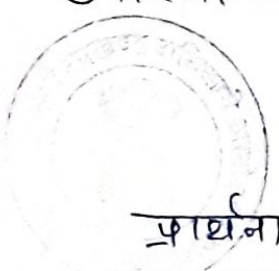
श्री नन्दा पिता रक्षिण जाति मीणा नि. कनाड त. अरनोद
(प्रार्थी)

बनाम

1. राम प्रकाश पिता मोगीलाल जाति चमार
2. रमेश चन्द्र पिता मोगीलाल जाति चमार
3. लक्ष्मीनारायण पिता मोगीलाल जाति चमार
4. मोगी बाई वेवा मोगीलाल जाति चमार
5. गणेश पिता भागीरथ जाति मीणा
6. देवु बाई पतिन भागीरथ जाति मीणा
7. कचरु पिता मेघा जाति मीणा
8. बालु पिता मेघा जाति मीणा
9. मन्ना पिता मेघा जाति मीणा
10. रामा पिता मेघा जाति मीणा
11. खातुडी पतिन मेघा जाति मीणा

सनी नि. कनाड अप्रार्थीगण

उपस्थित-



1. श्री नन्द लाल मीणा - अधि. प्रार्थी
2. श्री विमल कुमार मोदी - अधि. अप्रार्थी सं 1-4

प्रार्थना-पत्र अन्तर्गत धारा - 251A आर.टी. एक्ट

निर्णय

दिनांक - 31-3-21

संक्षेप में प्रार्थना-पत्र के तथ्य इस प्रकार हैं कि प्रार्थी के खाने और कबजे की आवश्यकता ग्राम अरनोद प. ह. अरनोद में खाला सं. 431 आ. नं. 1779 रकबा 1.49 है। लिखत सं. 1

उपखण्ड अधिकारी
अरनोद

प्रार्थी और अग्रार्थीगण विज्ञाप दे- तीन वर्षों से वाषटकारों के समय से आते-जाते हैं। अग्रार्थीगण ने आ. नं. 1780 व 1896 से गुजर रहे रास्ते में ड के लगाई रास्ते को हटाई कर अपनी आराजी में मिलाकर बंद कर दिया जो राजस्व रिपोर्ट में दर्ज नहीं है। आषे-दिन लड़ाई भंगडा करते हैं, धमकिया देते हैं। विपक्षीगण ने रास्ते को बंद कर दिया है प्रार्थी में ड पर रास्ता ~~बंद~~ को राजस्व रिपोर्ट में दर्ज कृताना चाहता है। प्रार्थी ~~की~~ आराजी 1779 में आने का रास्ता विपक्षीगण भी आ. नं. 1780, 1896 में से लेकर गुजर रहा है जो प्रार्थी कृषि कार्य करने हेतु उपयोग में लेश है। 15-20 दिन पूर्व विपक्षीगण ने रास्ता बंद कर दिया। तहसीलदार सा. के यहाँ उक्त आराजी पर आने-जाने के रास्ते से के जाने वाला मौजा पंच रिपोर्ट भी प्रस्तुत की जिसमें विवादित रास्ते आ. नं. 1779 से आ. नं. 1780, 1896 तक आने वाले रास्ते को बंद कर दर्शाया है।

अतः प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत कर निवेदन है कि मौजा अरबोड की आ. नं. 1779 से आ. नं. 1780, 1896 तक गुजरने वाले रास्ते को पुनः खुलवाये एवं उक्त रास्ते को कृषि कार्य में उपयोग में आये ऐसा चौड़ा रास्ता करवाया जावे।

प्रार्थना-पत्र दर्ज वजिरेर कर अग्रार्थीगण को जरिये सम्मिलित तलब लिखा गया। अग्रार्थी संख्या 1 लगा 4 की कोर से अखिलता श्री विमलकुमार मोदी ने जवाब पेश किया। 5 ले 19 की कोर से इकवाली जवाब पेश किया। प्रार्थना-पत्र पर बरत दुनीगरी अपनी कहस में विद्वान अखिलता प्रार्थी के प्रार्थना-पत्र में अंकित तलों को दोहराते हुये चपत किया कि हमारी आराजी पर आने के लिये आ. नं. 1896 जो कि अग्रार्थी 1 लगा 4 की व अ. नं. 1780 जो कि अ. ग. है, 5 लगा. 11 की बालेदारी की है से से रास्ता जाता है जो कि राजस्व रिपोर्ट में दर्ज नहीं है। रास्ते को अग्रार्थी सं. 1 लगा 4 ने बंद कर दिया जिसे खुलवाया जावे, नियमानुसार राशि या पुगत ~~प्रार्थी~~

लगा. 

द्वारा कर दिया जाएगा। इस सम्बन्ध में इच्छा रखने की प्रति भी
पेश की।

विद्वान् अधिवक्ता कर्णवीर्य शं. । लम्बे ने अपने साथी
अधिवक्ता के अपनों का कण्डन करते हुए तर्क दिया कि प्रार्थी
ने जो प्रार्थना-पत्र पेश किया जो गलत व विचलित नहीं है।
अपने अधिलेख में प्रार्थना शान्ता बुलवाना चाह रहा है जो कि 251A
में शक्य नहीं होकर 251 में है। प्रार्थीने जो रिपोर्ट 18.5.20
तहसीलदार अर्जुन की पेश की है उसमें आरात्री सं. 1779 में आने
का राजा "पूर्व में ^{1775 में} लोक जाता था" अंकित है और अब 1896
में से चाहता है। अंकित है। 1775 राजेश्वर सिंह की आरात्री है
पूर्व में वही से आया जाना था जो राजा वही बुलवाया जावे जो कि
रिपोर्ट तहसीलदार में भी स्वीकार किया गया। प्रार्थी मात्र हमारी
आरात्री से ही शान्ता चाह रहा है जबकि शेष आरात्री 1781, 1782,
1783, 1962/1783, 1884, 1885 में भी शान्ता राजान् सिद्धों में
अंकित नहीं हैं। उक्त आरात्रियों के कारेदारों को पकड़ कर भी नहीं
आया है मरज हमें परेशान करने की नीयत से प्रार्थना-पत्र
पेश किया गया है। इच्छा नामा जो पेश किया इसकी पालना
सक्षम आयालय से करायें। प्रार्थी राजे के नाम पर आले को
बंद करना चाहता जिसके जोरो पेश है अतः प्रार्थी को प्रार्थना-
पत्र 251A आरटी. एम् में शक्य नहीं होने से कारिज किया
जावे।

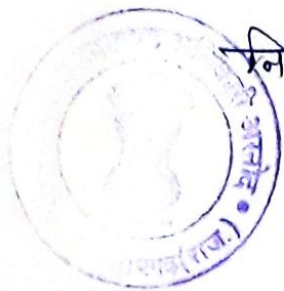
मैंने प्रार्थना-पत्र, जवाब प्रार्थनापत्रों, संलग्न दस्तावेजों का
ध्यानपूर्वक अवलोकन कर अध्ययन किया। विद्वान् अधिवक्ता उक्त
पत्रों की बरख पर गौर किया।

प्रार्थनापत्र की चरण सं. 2 में अंकित किया कि राजे को
हवाई कर बंद कर दिया है अभी अंकन चरण सं. 3, 4, 5, 6
में भी किया गया है अधिलेख में पुनः राजे को बुलवाने तथा
अनुभव प्रार्थना

चौड़ा करने का निर्देश किया है। तहसीलदार रिपोर्ट के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रार्थी पूर्व में अपनी आराजी की पूर्ति में देर लेकर निजि आराजी को ले लेकर आता जाता है जो नतीजा में बंद है। राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज नहीं है। नजरी नक्शों में भी मात्र 1780 आराजी का उल्लेख किया है शेष आराजीपार का नहीं है। चरण सं. 2 में अंकन है कि विगत दो-तीन वर्षों से तथा बाप-दादाओं के समय से दोनों में विरोधाभास है जो कि पटवारी रिपोर्ट से स्पष्ट है कि पूर्व में (बाप-दादा के समय) अन्व रान्ना था जिन पर नदा, कचके कतर लाल, हरिश्च के दत्ताम्य अंकित है। प्रार्थी ने इत्तराजमे की जो प्रति पेश की उत्तम कही पर भी आराजी नम्बर व खानेदार का नाम अंकित नहीं है। प्रार्थी के जोरों से दर्शित है कि प्रस्तावित रान्ने की भूमि प्राकृतिक बहाव क्षेत्र है।

राजस्थान पीनेली एक्ट 1955 की धारा-251A में नये मार्ग, भूमिगत पाइप लाइन विद्युत या विद्यमान मार्ग को चौड़ा करने के प्रावधान हैं। जबकि प्रार्थी ने बन्द रान्ने को खुलवाने का अनुरोध चाहा है तथा चौड़ा करने का भी।

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रार्थी द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना-पत्र सक्षम धारा में शर्तीय न होने से ठाबिले बारिज है। प्रार्थना-पत्र अस्वीकार कर बारिज किया जाता है। पत्रावली कैपल कुमार से मन्बर से कम की जाकर ठाबिले दफ्तर है।



निर्णय लिख जाकर खुले न्यायालय में सुनाया गया।

4/11
31/11/19
प्रोगरीन अधिकारी